अंतरा-शब्दशक्ति

देश की आशा

काव्य संग्रह

डी. कुमार 'अजस्र'

देश की आभा

(काव्य संग्रह)

डी. कुमार 'अजस्र'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-35-2

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - डी. कुमार 'अजस्र'

मूल्य - ४०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Desh ki aabha by D Kumar

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

कुछ लेखक के बारे में

दुर्गेश कुमार मेघवाल (डी कुमार 'अजस्र') सम्प्रति राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय गुढ़ा नाथावतान, बूंदी (राजस्थान) में हिंदी प्राध्यापक (व्याख्याता) के पद पर अपनी सेवाएं दे रहें है । आपका जन्म 17 मई 1977 को अरावली पर्वत श्रंखलाओं की गोद में अवस्थित और छोटी काशी के नाम से विश्वविख्यात बूंदी नगरी में आवासित श्री प्रभुलाल मेघवाल और मांगीबाई के प्रेम से परिपूर्णित परिवार में हुआ । पिता राजस्थान पुलिस में उपनिरीक्षक पद से रिटायर्ड होने के उपरांत भी परिवार में पूर्णता बढ़ाते हुए और माँ औपचारिक रूप से अनपढ़ होते हुए भी विवेक की अथाह गहराइयों में पारंगत रही है । ऐसे ही परिवार के बीच पल-बढ़ कर अपनी औपचारिक शिक्षा स्नातकोत्तर हिंदी और शिक्षा स्नातक की पूर्ण की ।

बचपन और शिक्षा के मोड़ गुजरने के पश्चात सांगोद(कोटा) के श्री दौलतराम जी की सुपुत्री कलावती मेघवाल के साथ 2002 में दाम्पत्य जीवन में पदार्पित हो शिक्षा को ही जीवन का ध्येय और जीविकोपार्जन का मन्त्र बनाकर 2002 से ही अध्ययन के साथ-साथ अध्यापन से भी जुड़ गए किन्तु राजकीय सेवा में अध्यापक के रूप में 2008 से विधिवत रूप से सेवारत है । अपने पुरजोर प्रयासों से ही राजकीय सेवा में रहते हुए ही प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा RPSC पास कर 2017 में सीधे प्राध्यापक पद पर पहुँच कर हिंदी के लिए पूर्णतः समर्पित होकर रचनाकार्य में प्रवृत हो गए । आपकी लेखनी को हिंदी साहित्य साधना के निमित्त बाबू बालमुकुंद गुप्त हिंदी साहित्य सेवा सम्मान-2017 के साथ ही भाषा सारथी सम्मान-2018 से भी सम्मानित किया गया है और मातृभाषा.कॉम के तत्वाधान में संकलित साँझा काव्य संग्रह में आपकी रचना 'हिंदी शतावली' को सम्मान के साथ शामिल किया गया ।

अनुक्रमणिका

1.	देश की आभा	5
2.	दिल में प्यार तुम्हारा है	6
3.	बापू गीत	7
4.	करते हैं प्रतिज्ञा	8
5.	कर्म कलम-कागज का	9
6.	प्यारे प्यारे छोटे बच्चे है हम,..	10
7.	भारत भुवन	11
8.	ए शहीदों	12
9.	संविधान गीत	13
10.	युवा आह्वान-गीत	14
11.	राजस्थान हमारा है	15
12.	कुर्बानी कोई क्या देखे	16

देश की आभा

स्वार्थ के वश सब अपनी सोचे, देश की है किसको चिंता।
एक स्वार्थ से सब स्वार्थ सधेंगे,सोचो तुम जो हो जिन्दा।
बाग ही गर जो उजड़ गया तो, फूल कहाँ रह पायेगा।
गुलशन भले ही आज सजा हो,पतझड़ में मुरझाएगा।

एक-एक से मिलकर हम अब,सवा अरब के पार हुए।
एक पेट और हाथ है दो, फिर भी, पूर्ण आबाद न आज हुए।
माना यह कि दो सौ बरसों की,हमने गुलामी भी सही।
पर सत्तर बरसों की आजादी,कम भी तो होती नहीँ।

कहीँ चूक तो हमसे हुई ना,सोचो फिर चिंतन करके।
आजादी की हाला पीकर, होश हमारे हुए फुर्र से।
आजादी मिलने भर से न,लक्ष्य हमें मिल पायेगा।
दौड़ में जो हम सुसुप्त हुए तो,कछुआ जीत ही जायेगा।

देखो फिर से' उगते सूर्य '(जापान) को,देशों में जो मिसाल बना।
कोप न जाने कितने सहकर,आबाद (विकसित) सम्भल कर आज बना।
राष्ट्रभक्ति का वो ही जज्बा, गर, देश-जन न ला पायेगा।
लघु पड़ोसी होते हुए भी, कोई भी आँख दिखाएगा।

अब भी समय है लोकतन्त्र की,ज्वाला और प्रज्वलित करो।
एक-एक कर सब मिलकर ही, देश को फिर संगठित करो।
राष्ट्र यज्ञ में एक आहुति, हर-जन की जब भी होगी।
देश की आभा फिर हो सोने सी,उन्मुक्त गगन का हो पंछी।

दिल में प्यार तुम्हारा है

दिल में प्यार तुम्हारा है,भारत को तू प्यारा है ।
झंडा ऊँचा हमारा है,जग में सबसे ही न्यारा है ।।

तीन रंग लिए फहरा करता,आंधी तूफां से नहीँ डरता ।
समय का पहिया आगे बढ़ता,तुझको देख के जी नहीँ भरता ।।
वारूं जीवन सारा ये,झंडा ऊँचा हमारा है ।दिल में प्यार तुम्हारा है।

उड़ता आसमान में चढ़के,तुझको देख देख मन हरखे ।।
रहता दुनियां में आगे बढ़के,भाग्य हमारा क्यों नहीँ दमके ।
तू तो मान हमारा है,झंडा ऊँचा हमारा है ।दिल में प्यार तुम्हारा है ......

तुझ पर बलि बलि हम न्यौछावर,महिमा तेरी है सबसे ऊपर ।
गाएँ गीत गजल सब तुझ पर,बन जाए ये इतिहास धरोहर ।
पूजे तुझे जग सारा ये,झंडा ऊँचा हमारा है ।दिल में प्यार तुम्हारा है ....

दिन स्वतन्त्रता (या गणतंत्र का)जब जब आए,महल मुंडेरों पे तू लहराए ।
शान-मान तू मन में जगाए,तुझ पर तन-मन-जान लुटाएं,
तुझको नमन हमारा है,झंडा ऊँचा हमारा है ।दिल में प्यार तुम्हारा है ....

जब सेनाएँ रण में जाएं,दुश्मन को वो धूल चटाएं ।
सैनिक तुझ पर जान लुटाएं,सब मिल ‘ जय हो तेरी ‘ गाएँ ।
गूंजे ‘ जय हुंकारा ‘ है,झंडा ऊँचा हमारा है ।
दिल में प्यार तुम्हारा है,भारत को तू प्यारा है ।
झंडा ऊँचा हमारा है,जग में सबसे ही न्यारा है ।। दिल में प्यार तुम्हारा है ......

बापू गीत

(लय....हम तुम चोरी से बंधे इक डोरी से)

महात्मा गांधी ने,हो... बापू गांधी ने, लियो रे जन्म अवतार।

बापू गांधी ने,हो... महात्मा गांधी ने, कियो रे भारत उद्धार।

हिन्दुस्थान का प्यारा,वो भारत माँ का दुलारा।

सत्य अहिंसा वाला,वो प्रेम लुटाने वाला।

देखे है जग उसे,जग उसे भारत के भाल पर। कि बापू गांधी ने ....

जब दो अक्टूबर आया,वो करम (करमचन्द) जन्म घर पाया।

वो मोहनदास कहाया, माँ पुतली गोद खिलाया।

आई जो कस्तूरबा,तूरबा जीवन सम्भाल घर । कि बापू गांधी ने ....

असहयोग चलाया,और सब के मन में भाया।

गोलमेज़ जाकर भी,अवज्ञा संग ही लाया।

पूना के मेल से, जेल से,लाया वो प्रेम भर। कि बापू गांधी ने ....

सत्य अहिंसा साथी,फिर लेकर हाथ में लाठी।

तब भारत छोड़ गुलामी,आजादी हमको दिलादी।

लाया वो देश में,देश में सूरज निकाल कर... कि बापू गांधी ने......

जब तीस जनवरी आई,और गोली प्रेम की खाई।

तब राम की टेर लगाई,सारी दुनियां गम में समाई।

रोए है अब सभी अब सभी बापू को याद कर .....कि बापू गांधी ने,...

महात्मा गांधी ने,हो बापू गांधी ने,

लियो रे जन्म अवतार।

बापू गांधी ने,हो महात्मा गांधी ने,कियो रे भारत उद्धार।

कि बापू गांधी ने ...

करते हैं प्रतिज्ञा

करते है प्रतिज्ञा,हम सब करते है प्रतिज्ञा।...2

स्वच्छ रहेंगें,स्वस्थ रहेंगे,भारत को हम स्वच्छ करेंगें।करते हैं प्रतिज्ञा ....

शौच खुले में अब नहीँ करेंगें, जल थल को अब साफ रखेंगें।करते हैं प्रतिज्ञा ....

हाथ हमारे कौशल-धन-बल, सदा साफ ये सदा हो निर्मल।हाथ धो के जल-पान करेंगें। करते है प्रतिज्ञा.....

कचरा तो है स्वास्थ्य का दुश्मन, फेंक,जलाने से दूषित तन मन।कचरे को निस्तारित करेंगें। करते है प्रतिज्ञा ....

दूषित जल, बीमारी हो घर घर, नदी-सरोवर होंगे बेघर।जल को अब उपचारित करेंगें। करते है प्रतिज्ञा.....

आस-पड़ौस को स्वर्ग करेंगें, नरक गन्दगी नहीँ सहेंगें।जन-सुधार खुद भी सुधरेंगें। करते है प्रतिज्ञा ....

स्वच्छ सफाई अमूल्य स्वधन, फिर इससे क्यों हम रहे निर्धन।इस धन से धनवान बनेंगे। करते हैं प्रतिज्ञा....

स्वच्छ भारत सबका हो सपना, स्वास्थ्य बनेगा सबका गहना।स्वच्छ बन, निरोग बनेंगें। करते है प्रतिज्ञा.......

साफ-सफाई दिल में बसाएँगे, स्वच्छता के सब गीत गाएंगे।अभियान बना इसे सफल बनाएंगे।करते हैं प्रतिज्ञा......

स्वच्छ रहेंगें,स्वस्थ रहेंगे,भारत को हम स्वच्छ करेंगें।

करते हैं प्रतिज्ञा, हम सब करते है प्रतिज्ञा।

शौच खुले में अब नहीँ करेंगें, जल थल को अब साफ रखेंगें।करते हैं प्रतिज्ञा ....

कर्म कलम-कागज का

कलम कनक की भले नहीँ है,अक्षर असर तो फिर भी करेंगे ।
कागज करार भले ही करे न,मसि कसी तो सब सार सरेंगे ।
पटल रजत जो कभी मिला तो,पीड़ा तृण कण्टकों की हरेंगें ।
उम्मीदों के पंख भले कोमल हो,लेखन से नभ परवाज उड़ेंगे ।
एक से मिल एक ग्यारह बने तो,कदम चल के मंजिल पे जमेंगे ।
स्याह स्याही जो कागज ढली तो,ज्ञान के अगणित दीप जलेंगे ।
न मिले भले सम्मान सिक्कों के,लिख-लिख तब कागज भी चलेंगें ।
शान हमारी जो न कभी बनी तो,कलम की धार और तीक्ष्ण करेंगें।
दिलकश भावों को सहेज सके हो,कलमकार बन कागज भरेंगे ।
अक्स समाज का लफ़्ज बने जो,जन के मन फिर न कभी डरेंगें ।
अन्याय अनीति अपमान अवक्षय,राम शर की जन-ज्वाला जलेँगेँ ।
वाणी वीर विपुल सी न सही वो,स्वर समय का सजा-साज सुनेंगें ।
कमजोर कमसिन कमतर कर भी,देकर जोश जोर पुरजोर भरेंगें ।
तीक्ष्ण तीर तरकश तेजस तो,तेज थार तट-तिनपार तरेंगें ।
प्रेम पीर,प्रकृति पुर पूरण का,प्राण प्रणय प्रण पर पुरेंगे ।
जलद जो जम-जमकर झमके,मन मयूर मदमस्त उड़ेंगें।
लेखन लक्ष्य लेकर लोह लहके,लिखकर लेख उल्लेख लिखेंगें ।
रंग-रंग से रंग रहे संस्कृति संग,पावन-होली के रंगों से रंगेंगें ।
काया-खाक कर्म-तत्व बनाकर,आत्मा से कण-कण में रमेंगें ।
आरती माँ भारत-भू की गाकर,भारत-भाग्य विधाता भजेंगें ।

प्यारे प्यारे छोटे बच्चे है हम,...

(लय:-चंदा है तू मेरा सूरज है तू ...,...)

कच्चे है हम,मगर सच्चे है हम,प्यारे प्यारे छोटे बच्चे है हम।.....2

गुलशन में कितने ही रंग से खिले,

माला में गुंथे बड़े अच्छे है हम।

कच्चे है हम मगर सच्चे है हम।

भारत की हम शान बनें,मान और अभिमान है हम।...2

इस देश की हम रक्षा करें,छोटे सैनिक बड़े न्यारे है हम।

नन्हें है हम मगर कम तो नहीँ,सब मिलके गुलशन सवांरेंगें हम।

कच्चे है हम मगर सच्चे है हम।

पढ़-लिख-बढ़ हम लायक बनें,करते है प्रण आज हम।....2

भारत तरक्की के पथ पर बढ़े,कदमों से कदम मिलाएंगे हम।

दुश्मन जो डाले गर टेडी नजर,तो उसको सबक सिखला देंगें हम।

कच्चे है हम मगर सच्चे है हम।

यूँ हम भी बैठे है तन के,अपनी संस्कृति के संग।....2

रंगों में यूँ हम रंग से भरे,रंगों में जैसे मिल जाये है रंग।

इज्जत स्वाभिमान सब दिल में बसा,तारों से आगे बढ़ाएं कदम।

कच्चे है हम,मगर सच्चे है हम,

प्यारे प्यारे छोटे बच्चे है हम।

गुलशन में कितने ही रंग से खिले,

माला में गुंथे बड़े अच्छे है हम।

कच्चे है हम मगर सच्चे है हम।

भारत भुवन

लय:- बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम..

जिगर जां न्यौछावर करते है हम । तुझ पर वतन मेरे,भारत भुवन ।
जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।

वेदों की संस्कृति,प्राणों से प्यारी । पापों का मोचन, ये गंगा हमारी ।
सागर ये चरणों पे करता नमन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।
तुझ पर वतन मेरे,भारत भुवन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।

राम और रहीम की वो, जोड़ी है प्यारी ।विविधता में एकता है,जग से न्यारी ।
बुद्ध की गरिमा तुझमें नानक भजन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।
तुझ पर वतन मेरे,भारत भुवन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।

तिरंगा ये तेरा,गगन चूमे जाता । स्तम्भ ये अशोक का,मान बढ़ाता ।
पूजें हैं हम तो तुझको होके मगन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।
तुझ पर वतन मेरे,भारत भुवन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।

बापू की बातें वो,अब्दुल(कलाम) की खोजें ।दिल्ली पे शोभित दुनियां की मौजें ।
सातों समुद्रों से कहे ये पवन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।
तुझ पर वतन मेरे,भारत भुवन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।

ज्यूँ फूले दुनियां,सब ऊपर तू चमके । उन्नति तेरी होवे, अब जम जमके ।
तिरंगा ही फहरे सारी दुनियां गगन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।
तुझ पर वतन मेरे,भारत भुवन । जिगर जां न्यौछावर करते है हम ।

ए शहीदों

ए शहीदों तुम अपनी चिताओं में गर्मी बनाए रखना,
ये गर्मी ही युवाओं के रक्त को उबालेगी ।।
जब उबलेगा रगों में रक्त देश के युवाओं के,
तब ही तो ये भारत माँ मस्तक को अपने उठा लेगी।ए शहीदों ....
जलती रहेगी जब तलक यूँ चिताएं शहीदों की,
उसकी ही आंच में फिर हर माँ स्वपुत्र पालेगी ।ए शहीदों ....
दीपक की लौ जब उग्र ज्वाला भड़का लेगी,
फिर क्या मजाल उन गद्दारो की जो देश को चुरा लेगी ।ए शहीदों.....
आए जो 'आततायी' भी उतर कर 'नापाक' से
जलाकर भष्म कर वो उनको खाक में मिला देगी ।ए शहीदो.....
आए जो सामने कोई फिर देश का दुश्मन भी जब,
देश की हर बाला भी शमशीर को उठा लेगी ।ए शहीदों ....
भर दो उस आग को जला के अपना जिस्म तुम,
उन फड़कती भुजाओं में जो फिर देश को बचा लेगी ।ए शहीदों ......
ज़ाया न जाने पाए शहादत तुम्हारे खून की,
उस खून की ज्वाला ही कोई ज्वाला मुखी बना लेगी ।ए शहीदों.....
नमन है शहीदों को जो अभी चिताओं में आहूत है,
वो ही तपन इस देश को अब फौलाद भी बना लेगी।
ए शहीदों तुम अपनी चिताओं में गर्मी बनाए रखना,
ये गर्मी ही युवाओं के रक्त को उबालेगी ।।

संविधान गीत

जनता की अभिलाषा का सम्मान तू ।देश में सबसे ऊपर है संविधान तू ।
भारत की छवि तुझमे हमको दिखती है ।देश को तुझसे ही गरिमा मिलती है ।
जय हो तेरी भारत का अभिमान तू ।देश में सबसे ऊपर है....
गणतन्त्र बनाकर तूने जो उपकार किया ।सब जन को कर्तव्य दिया अधिकार दिया।
अधिकार बनाकर तुझको अपना मान लूँ ।देश में सबसे ऊपर है ...
प्रारूप जो तेरा भीम राव ने बनाया है ।देश के सब जन का मन यूँ हर्षाया है ।
हिन्द जनों के सपनों की है उड़ान तू ।देश में सबसे ऊपर है ....
आजादी का तूने सच्चा सुख है दिया ।संघ बनाकर देश को सम्प्रभु है किया ।
जनता की सरकारों में है जान तू ।देश में सबसे ऊपर है ....
लोकतन्त्र का सबसे बड़ा आगार है ।वयस्क जनों के मत का भी अधिकार है ।
अधिकारों में सबसे बड़ा अधिकार तू । देश में सबसे ऊपर है....
नियम ज्योति से देश को राह दिखाता है ।न्याय धर्म पर आगे हमको बढ़ाता है ।
देश की अस्मिता का प्रतिमान तू ।देश में सबसे ऊपर है ...
निरपेक्ष पन्थ है समता है समाजों की ।प्रार्थना,पूजा लड़िया है नमाजों की ।
सर्वधर्म का विकास है उत्थान तू ।देश में सबसे ऊपर है ...
संस्कृतियों की विविध विविध पहचान है ।माला यूँ गुंथी जैसे इक जान है ।
खिलते फूलों की महकी सी मुस्कान तू ।देश में सबसे ऊपर है ....
गणतंत्र दिवस पर हम ये कसम उठाते है ।देश धर्म ईमान से फर्ज निभाते है ।
सब ग्रन्थो में गीता का है ज्ञान तू ।देश में सबसे ऊपर है ....
जनता की अभिलाषा का सम्मान तू ।देश में सबसे ऊपर है संविधान तू ।

युवा आह्वान-गीत

उठो देश के भावी युवाओं हिन्द ने तुम्हे बुलाया है ।
लक्ष्य से पहले रुको नहीँ तुम मार्ग ये हमको दिखाया है ।
देश को जिसने विश्व पटल पर गौरव मान दिलाया है।
विश्व युवा उस विवेक आनन्द का आज जन्मदिन आया है ।उठो देश के भावी युवाओं ....

संस्कृति अपनी समग्र शाश्वत वेदों को तुम जरा टटोलो ।
बुद्धि तुम्हारी क्षीण नहीँ है ज्ञान चक्षुओं को अब तो खोलो ।
गैर-राग में बहुत गा चुके अब तो अपने गीतों में बोलो ।
धीर मनीषियों की वाणी में आज ओज यह छाया है । उठो देश के भावी युवाओं.....

भले विश्व विज्ञान उन्नति से आज शिखर पर पहुँच गया ।
भारत का अब गुजरा बचपन अब लगता है देश युवा ।
बल सौंदर्य के संवर्धन से देश बनेगा स्वस्थ नया ।
कुसुम रूप इस देशज्योति को वीरों ने प्राण पिलाया है । उठो देश के भावी युवाओं.....

कर्म ज्ञान ईमान से खुद को अब तो तुम समृद्ध करो ।
देश धर्म कर्तव्य मार्ग पर अपने आपको बद्ध करो ।
नशा,दुष्प्रवृत्ति,बड़बोलों से खुद को तुम निषिद्ध करो ।
युवा सन्त उस महापुरुष ने ऐसा ही समझाया है । उठो देश के भावी युवाओं,..

देश को जिसने विश्व पटल पर गौरव मान दिलाया है।
खेल कला विज्ञान क्षेत्र में तुमको नाम कमाना है ।
विश्व धरातल बड़ा ही दुर्गम फिर भी पैर जमाना है ।
उन्नति प्रगति के ग्राफों को शिखरों तक पहुँचाना है।
मान बढ़ाना है उस भारत का जिसने जग को सिखाया है ।उठो देश के भावी युवाओं...

देश को जिसने विश्व पटल पर गौरव मान दिलाया है।
विश्व युवा उस विवेक आनन्द का आज जन्मदिन आया है ।

राजस्थान हमारा है

देखो कितना न्यारा है,राजस्थान हमारा है ।
हमको सबसे ही प्यारा है,यह अभिमान हमारा है ।

'पुष्कर' तीर्थों में है पावन, शोभित 'मारवाड़ 'मनभावन ।
बोली लगती मिश्री माखन,जन जन इसका है बड़भागन।
जनता का ये दुलारा हैं जन-जन को ये प्यारा है ।देखो कितना.....
'मीरां 'भक्ति की आन निभाई,'पद्मिनी' जौहर ज्वाला माई।
'पन्ना 'आस मेवाड़ बचाई,'हाड़ी' शीश काट हर्षाई ।
शक्ति नारी धारा है,कण-कण में उजियारा है । देखो कितना ...
'तेजा' धर्म ध्वजा फहराई,माटी पा 'प्रताप' हर्षाई ।
'पृथ्वी'(पृथ्वीराज चौहान)हिन्द की शान बढ़ाई,
'सूरज'(राजा सूरजमल) सूरज आभा पाई ।
वीरों का उजियारा है,जो इतिहास हमारा है ।देखो कितना....
'आबू ' गगन से होड़ लगाये, 'चम्बल ' खुशियां ही बरसाए ।
श्रेणी 'अरावली' मन भाए, 'धरती धोरां री ' कहलाए ।
तन मन इस पर वारा है,यह तो प्राण हमारा है ।देखो कितना...
जयपुर इसकी है राजधानी,कोटा बूंदी कहे कहानी ।
गाथा वीरों ने आप बखानी, डी कुमार की सुन लो जुबानी ।
भारत माँ का दुलारा है,जग पहचानता सारा है ।

देखो कितना न्यारा है, राजस्थान हमारा है ।
हमको सबसे ही प्यारा है,यह अभिमान हमारा है ।

कुर्बानी कोई क्या देखे

(लय :-तेरे चेहरे से नजर नहीँ हटती नजारे हम क्या देखें)

प्यारे भारत,प्यारे भारत,तुझपे मैं कुरबां कुर्बानी कोई क्या देखे ।
मेरे दिल पे ये तेरे ही निशां निशानी कोई क्या देखे ।

धरती पे तेरी ये मुल्क समाया है,सारी ही दुनियां में हमको ये भाया है ।
और दुनियां की क्या है कहानी,कहानी कोई क्या देखे।
प्यारे भारत तुझपे मैं कुरबां क़ुरबानी कोई क्या देखे ।

तेरे जवानों के मस्ती है खून में,तेरे लिए वो दे दे जां ये जुनून में ।
तेरी सीमा पे दुश्मन क्या देखे,दुश्मनी कोई क्या देखे।
प्यारे भारत तुझपे मैं कुरबां,क़ुरबानी कोई क्या देखे।

जादू है तेरे इक अंग कश्मीर में,स्वर्ग इसे कहते है दुनियां के शरीर में ।
दुनियां तेरी है सारी दीवानी,दीवानी कोई क्या देखे।
प्यारे भारत तुझपे मैं कुरबां,क़ुरबानी कोई क्या देखे।

सातों समुद्रों में इक सागर हिन्द है,सारे सागरों की इससे ही जिन्द है ।
सातों सागरों की इसमें रवानी,रवानी कोई क्या देखे।
प्यारे भारत तुझपे मैं कुरबां, क़ुरबानी कोई क्या देखे।

जगत गुरु है तू दुनियां की नजर में,तीनों ही लोकों में फैली ये खबर है ।
जागे फिर से वो तेरी जवानी,जवानी कोई क्या देखे ।
प्यारे भारत,प्यारे भारत,तुझपे मैं कुरबां कुर्बानी कोई क्या देखे ।
मेरे दिल पे ये तेरे ही निशां निशानी कोई क्या देखे ।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - दुर्गेश कुमार मेघवाल 'अजस्र'
जन्म - 17 मई 1977, बूंदी (राजस्थान)
पिता - श्री प्रभु लाल मेघवाल
माता - श्रीमती मांगीबाई मेघवाल
पत्नी - श्रीमती कलावती मेघवाल
शिक्षा - शिक्षा स्नातक (बी.एड.), स्नातकोत्तर (हिन्दी)
मो. - 09461302199
सम्प्रति - राजकीय आदर्श उच्च.माध्य.विद्यालय, गुढ़ा नाथवतान, बूंदी (राजस्थान) में हिन्दी प्राध्यापक।
प्रकाशन - हिंदी शतावली (साझा काव्य संग्रह) - मातृभाषा.कॉम प्रकाशन।
सम्मान -1. बाबू बालमुकुंद गुप्त हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान - 2017।
2. भाषा सारथी सम्मान - 2018।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-35-2

मूल्य- 40/-